

Chapter बाईस

अजमीढ के वंशज

इस अध्याय में दिवोदास के वंशजों का वर्णन है। साथ ही ऋक्षवंशी जरासन्ध तथा दुर्योधन, अर्जुन इत्यादि का वर्णन हुआ है।

दिवोदास का पुत्र मित्रायु था जिसके चार पुत्र हुए—च्यवन, सुदास, सहदेव तथा सोमक। सोमक के एक सौ पुत्र हुए जिनमें सबसे छोटा पृषत था जिससे द्रुपद उत्पन्न हुआ। द्रुपद की पुत्री द्रौपदी थी और पुत्रों में धृष्टद्युम्न सबसे बड़े थे। धृष्टद्युम्न का पुत्र धृष्टकेतु था।

अजमीढ का एक अन्य पुत्र ऋक्ष था। ऋक्ष का पुत्र संवरण हुआ। संवरण से कुरु हुआ जो कुरुक्षेत्र का राजा बना। कुरु के चार पुत्र थे—परीक्षी, सुधनु, जह्नु तथा निषध। सुधनु के वंश में सुहोत्र, च्यवन, कृती तथा उपरिचर वसु हुए। उपरिचर वसु के पुत्रों में बृहद्रथ, कुशाम्ब, मत्स्य, प्रत्यग्र तथा चेदिप चेदि राज्य के राजा बने। बृहद्रथ के वंश में कुशाग्र, ऋषभ, सत्यहित, पुष्पवान तथा जह्नु हुए। बृहद्रथ की दूसरी पत्नी की कुक्षि से जरासन्ध हुआ। उसके बाद सहदेव, सोमापि तथा श्रुतश्रवा हुए। कुरु-पुत्र परीक्षि निःसन्तान रहा। जह्नु के वंशजों में सुरथ, विदूरथ, सार्वभौम, जयसेन, राधिक, अयुतायु, अक्रोधन, देवातिथि, ऋक्ष, दिलीप तथा प्रतीप हुए।

प्रतीप के पुत्र थे देवापि, शान्तनु तथा बाह्लीक। देवापि के जंगल चले जाने पर उसका छोटा भाई शान्तनु राजा हुआ। छोटा होने के कारण शान्तनु राजसिंहासन का अधिकारी नहीं था, किन्तु उसने बड़े भाई की कोई परवाह न की। फलस्वरूप, बारह वर्षों तक वर्षा नहीं हुई। अतएव ब्राह्मणों के कहने पर शान्तनु देवापि को राज्य लौटाने को तैयार हो गया लेकिन शान्तनु के मंत्री की चाल से देवापि राजा होने के अयोग्य हो गया। इसलिए शान्तनु ने पुनः राज्यभार ग्रहण किया और तब उसके राज्यकाल में ठीक से वर्षा हुई। देवापि अपनी योगशक्ति से आज भी कलाप-ग्राम नामक गाँव में रहता है। इस कलियुग में जब सोम के वंशज, जो चन्द्रवंशी कहलाते हैं, मर जायेंगे तो सत्ययुग के प्रारम्भ में देवापि पुनः सोमवंश की स्थापना करेगा। शान्तनु की पत्नी गंगा ने भीष्म को जन्म दिया जो बारह महाजनों में से हैं। शान्तनु के दो पुत्र और भी हुए—चित्रांगद तथा विचित्रवीर्य। ये सत्यवती के गर्भ से शान्तनु के वीर्य से उत्पन्न हुए थे। पराशर के वीर्य से

सत्यवती के गर्भ से व्यासदेव ने जन्म लिया। व्यासदेव ने *भागवत* की कथा अपने पुत्र शुकदेव से कही। विचित्रवीर्य की दो पत्नियों तथा उसकी दासी से व्यासदेव ने धृतराष्ट्र, पाण्डु तथा विदुर को जन्म दिया।

धृतराष्ट्र के दुर्योधनादि एक सौ पुत्र तथा दुःशला नाम की एक कन्या हुई। पाण्डु के पाँच पुत्र थे जिनमें युधिष्ठिर प्रमुख थे और इन पाँचों से द्रौपदी ने एक-एक पुत्र उत्पन्न किया। द्रौपदी के पाँचों पुत्रों के नाम थे प्रतिविन्ध्य, श्रुतसेन, श्रुतकीर्ति, शतानीक तथा श्रुतकर्मा। इन पाँच पुत्रों के अतिरिक्त पाण्डवों की अन्य पत्नियों से भी कई पुत्र हुए—यथा देवक, घटोत्कच, सर्वगत, सुहोत्र, नरमित्र, इरावान, बभ्रुवाहन तथा अभिमन्यु। अभिमन्यु से महाराज परीक्षित उत्पन्न हुए और परीक्षित से चार पुत्र उत्पन्न हुए—जनमेजय, श्रुतसेन, भीमसेन तथा उग्रसेन।

इसके बाद शुकदेव गोस्वामी ने पाण्डुवंश के भावी पुत्रों का वर्णन किया। उन्होंने बतलाया कि जनमेजय का पुत्र शतानीक होगा जिसके वंश में सहस्रानीक, अश्वमेधज, असीमकृष्ण, नेमिचक्र, चित्ररथ, शुचिरथ, वृष्टिमान, सुषेण, सुनीथ, नृचक्षु, सुखीनल, परिप्लव, सुनय, मेधावी, नृपञ्जय, दूर्व, तिमि, बृहद्रथ, सुदास, शतानीक, दुर्दमन, महीनर, दण्डपाणि, निमि तथा क्षेमक होंगे।

तत्पश्चात् शुकदेव गोस्वामी ने मागधवंश के राजाओं की भविष्यवाणी की। जरासन्ध के पुत्र सहदेव से मार्जारि, फिर उससे श्रुतश्रवा होगा। इसके बाद इस वंश में युतायु, निरमित्र, सुनक्षत्र, बृहत्सेन, कर्मजित, सुतञ्जय, विप्र, शुचि, क्षेम, सुव्रत, धर्मसूत्र, सम, द्युमत्सेन, सुमति, सुबल, सुनीथ, सत्यजित, विश्वजित तथा रिपुञ्जय होंगे।

श्रीशुक उवाच

मित्रायुश्च दिवोदासाच्च्यवनस्तत्सुतो नृप ।

सुदासः सहदेवोऽथ सोमको जन्तुजन्मकृत् ॥ १ ॥

शब्दार्थ

श्री-शुकः उवाच—श्रीशुकदेव गोस्वामी ने कहा; मित्रायुः—मित्रायु; च—तथा; दिवोदासात्—दिवोदास से उत्पन्न; च्यवनः—च्यवन; तत्-सुतः—मित्रायु का पुत्र; नृप—हे राजा; सुदासः—सुदास; सहदेवः—सहदेव; अथ—तत्पश्चात्; सोमकः—सोमक; जन्तु-जन्म-कृत्—जन्तु का पिता।

शुकदेव गोस्वामी ने कहा : हे राजा, दिवोदास का पुत्र मित्रायु था और मित्रायु के चार पुत्र हुए जिनके नाम थे च्यवन, सुदास, सहदेव तथा सोमक। सोमक जन्तु का पिता था।

तस्य पुत्रशतं तेषां यवीयान्पृषतः सुतः ।
स तस्माद्द्रुपदो जज्ञे सर्वसम्पत्समन्वितः ॥ २ ॥

शब्दार्थ

तस्य—उसके (सोमक के); पुत्र-शतम्—एक सौ पुत्र; तेषाम्—उन सबों के; यवीयान्—सबसे छोटा; पृषतः—पृषत; सुतः—पुत्र;
सः—वह; तस्मात्—उससे (पृषत से); द्रुपदः—द्रुपद; जज्ञे—उत्पन्न हुआ; सर्व-सम्पत्—सारे ऐश्वर्य से; समन्वितः—अलंकृत ।

सोमक के एक सौ पुत्र थे जिनमें सबसे छोटा पृषत था। पृषत से राजा द्रुपद उत्पन्न हुआ जो सभी प्रकार से ऐश्वर्यवान था।

द्रुपदाद्द्रौपदी तस्य धृष्टद्युम्नादयः सुताः ।
धृष्टद्युम्नाद्दृष्टकेतुर्भार्याः पाञ्चालका इमे ॥ ३ ॥

शब्दार्थ

द्रुपदात्—द्रुपद से; द्रौपदी—पाण्डवों की विख्यात पत्नी द्रौपदी; तस्य—उसके (द्रुपद के); धृष्टद्युम्न-आदयः—धृष्टद्युम्न इत्यादि;
सुताः—पुत्र; धृष्टद्युम्नात्—धृष्टद्युम्न से; दृष्टकेतुः—दृष्टकेतु नामक पुत्र; भार्याः—भार्याश्च के सारे वंशज; पाञ्चालकाः—पाञ्चालक कहलाते हैं; इमे—ये सभी ।

महाराज द्रुपद से द्रौपदी उत्पन्न हुई। महाराज द्रुपद के कई पुत्र भी थे जिनमें धृष्टद्युम्न प्रमुख था।
उसके पुत्र का नाम दृष्टकेतु था। ये सारे पुरुष भार्याश्च के वंशज या पाञ्चालवंशी कहलाते हैं।

योऽजमीढसुतो ह्यन्य ऋक्षः संवरणस्ततः ।
तपत्यां सूर्यकन्यायां कुरुक्षेत्रपतिः कुरुः ॥ ४ ॥
परीक्षिः सुधनुर्जह्नुर्निषधश्च कुरोः सुताः ।
सुहोत्रोऽभूत्सुधनुषश्च्यवनोऽथ ततः कृती ॥ ५ ॥

शब्दार्थ

यः—जो; अजमीढ-सुतः—अजमीढ का पुत्र; हि—निस्सन्देह; अन्यः—दूसरा; ऋक्षः—ऋक्ष; संवरणः—संवरण; ततः—उससे (ऋक्ष से); तपत्याम्—तपती; सूर्य-कन्यायाम्—सूर्यदेव की पुत्री के गर्भ से; कुरुक्षेत्र-पतिः—कुरुक्षेत्र का राजा; कुरुः—कुरु का जन्म हुआ; परीक्षिः सुधनुः जह्नुः निषधः च—परीक्षि, सुधनु, जह्नु तथा निषध; कुरोः—कुरु के; सुताः—पुत्र; सुहोत्रः—सुहोत्र; अभूत्—उत्पन्न हुआ; सुधनुषः—सुधनु से; च्यवनः—च्यवन; अथ—सुहोत्र से; ततः—च्यवन से; कृती—कृती नामक पुत्र ।

अजमीढ का दूसरा पुत्र ऋक्ष नाम से विख्यात था। ऋक्ष से संवरण, संवरण के उसकी पत्नी सूर्यपुत्री तपती के गर्भ से कुरु हुआ जो कुरुक्षेत्र का राजा बना। कुरु के चार पुत्र थे—परीक्षि, सुधनु, जह्नु तथा निषध। सुधनु से सुहोत्र, सुहोत्र से च्यवन और च्यवन से कृती उत्पन्न हुआ।

वसुस्तस्योपरिचरो बृहद्रथमुखास्ततः ।

कुशाम्बमत्स्यप्रत्यग्रचेदिपाद्याश्च चेदिपाः ॥ ६ ॥

शब्दार्थ

वसुः—वसु नामक पुत्र; तस्य—उसका (कृती का); उपरिचरः—वसु का उपनाम; बृहद्रथ-मुखाः—बृहद्रथ इत्यादि; ततः—उससे (वसु से); कुशाम्ब—कुशाम्ब; मत्स्य—मत्स्य; प्रत्यग्र—प्रत्यग्र; चेदिप-आद्याः—चेदिप आदि; च—भी; चेदि-पाः—चेदि राज्य के सभी शासक ।

कृती का पुत्र उपरिचर वसु था और उसके पुत्रों में, जिनमें बृहद्रथ प्रमुख था, कुशाम्ब, मत्स्य, प्रत्यग्र तथा चेदिप थे । उपरिचर वसु के सारे पुत्र चेदि राज्य के शासक बने ।

बृहद्रथात्कुशाग्रोऽभूषभस्तस्य तत्सुतः ।

जज्ञे सत्यहितोऽपत्यं पुष्पवांस्तत्सुतो जहुः ॥ ७ ॥

शब्दार्थ

बृहद्रथात्—बृहद्रथ से; कुशाग्रः—कुशाग्र; अभूत्—उत्पन्न हुआ; ऋषभः—ऋषभ; तस्य—उसका (कुशाग्र का); तत्-सुतः—उसका (ऋषभ का) पुत्र; जज्ञे—उत्पन्न हुआ; सत्यहितः—सत्यहित; अपत्यम्—सन्तान; पुष्पवान्—पुष्पवान; तत्-सुतः—उसका (पुष्पवान का) पुत्र; जहुः—जहु ।

बृहद्रथ से कुशाग्र उत्पन्न हुआ, कुशाग्र से ऋषभ, ऋषभ से सत्यहित, सत्यहित से पुष्पवान तथा पुष्पवान से जहु उत्पन्न हुआ ।

अन्यस्यामपि भार्यायां शकले द्वे बृहद्रथात् ।

ये मात्रा बहिरुत्सृष्टे जरया चाभिसन्धिते ।

जीव जीवेति क्रीडन्त्या जरासन्धोऽभवत्सुतः ॥ ८ ॥

शब्दार्थ

अन्यस्याम्—दूसरी; अपि—भी; भार्यायाम्—पत्नी के; शकले—भाग; द्वे—दो; बृहद्रथात्—बृहद्रथ से; ये—जो; मात्रा—माता द्वारा; बहिः उत्सृष्टे—छोड़ दिये जाने पर; जरया—जरा नामक राक्षसी; च—तथा; अभिसन्धिते—जोड़ दिये गये; जीव जीव इति—हे जीव, तुम जी उठो; क्रीडन्त्या—खेलते हुए; जरासन्धः—जरासन्ध; अभवत्—उत्पन्न हुआ; सुतः—पुत्र ।

बृहद्रथ की दूसरी पत्नी के गर्भ से दो आधे आधे खण्डों में एक पुत्र उत्पन्न हुआ । जब माता ने इन दो आधे आधे खण्डों को देखा तो उसने इन्हें फेंक दिया, किन्तु बाद में जरा नाम की एक राक्षसी ने खेल-खेल में उन्हें जोड़ते हुए कहा, “जीवित हो उठो, जीवित हो उठो ।” इस तरह जरासन्ध नामक पुत्र उत्पन्न हुआ ।

ततश्च सहदेवोऽभूत्सोमापिर्यच्छ्रुतश्रवाः ।

परीक्षिरनपत्योऽभूत्सुरथो नाम जाह्नवः ॥ ९ ॥

शब्दार्थ

ततः च—तथा उससे (जरासन्ध से); सहदेवः—सहदेव; अभूत्—उत्पन्न हुआ; सोमापिः—सोमापि; यत्—उसके (सोमापि); श्रुतश्रवाः—श्रुतश्रवा नामक पुत्र; परीक्षिः—कुरु को परीक्षि नामक पुत्र; अनपत्यः—निःसन्तान; अभूत्—रह गया; सुरथः—सुरथ; नाम—नामक; जाह्नवः—जह्नु का पुत्र ।

जरासन्ध से सहदेव नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ । फिर सहदेव से सोमापि और सोमापि से श्रुतश्रवा हुआ । कुरु के पुत्र परीक्षि के कोई पुत्र नहीं था, किन्तु कुरुपुत्र जह्नु के एक पुत्र था जिसका नाम सुरथ था ।

ततो विदूरथस्तस्मात्सार्वभौमस्ततोऽभवत् ।
जयसेनस्तत्तनयो राधिकोऽतोऽयुताय्वभूत् ॥ १० ॥

शब्दार्थ

ततः—उससे (सुरथ से); विदूरथः—विदूरथ नामक पुत्र; तस्मात्—उससे (विदूरथ से); सार्वभौमः—सार्वभौम नाम का पुत्र; ततः—उससे (सार्वभौम से); अभवत्—उत्पन्न हुआ; जयसेनः—जयसेन; तत्-तनयः—जयसेन का पुत्र; राधिकः—राधिक; अतः—और उससे (राधिक से); अयुतायुः—अयुतायु; अभूत्—उत्पन्न हुआ ।

सुरथ के विदूरथ नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ और विदूरथ से सार्वभौम हुआ । सार्वभौम से जयसेन, जयसेन से राधिक तथा राधिक से अयुतायु उत्पन्न हुआ ।

ततश्चाक्रोधनस्तस्माद्देवातिथिरमुष्य च ।
ऋक्षस्तस्य दिलीपोऽभूत्प्रतीपस्तस्य चात्मजः ॥ ११ ॥

शब्दार्थ

ततः—उससे; च—भी; अक्रोधनः—अक्रोधन नामक पुत्र; तस्मात्—उससे; देवातिथिः—देवातिथि; अमुष्य—उसका; च—भी; ऋक्षः—ऋक्ष; तस्य—उसके; दिलीपः—दिलीप; अभूत्—उत्पन्न हुआ; प्रतीपः—प्रतीप; तस्य—उसका; च—तथा; आत्म-जः—पुत्र ।

अयुतायु का पुत्र अक्रोधन, अक्रोधन का देवातिथि, देवातिथि का ऋक्ष, ऋक्ष का दिलीप और दिलीप का पुत्र प्रतीप हुआ ।

देवापिः शान्तनुस्तस्य बाह्लीक इति चात्मजाः ।
पितृराज्यं परित्यज्य देवापिस्तु वनं गतः ॥ १२ ॥
अभवच्छान्तनू राजा प्राङ्महाभिषसंज्ञितः ।
यं यं कराभ्यां स्पृशति जीर्णं यौवनमेति सः ॥ १३ ॥

शब्दार्थ

देवापिः—देवापि; शान्तनुः—शान्तनु; तस्य—उसके (प्रतीप के); बाह्लीकः—बाह्लीक; इति—इस प्रकार; च—भी; आत्म-जाः—पुत्र; पितृ-राज्यम्—पिता की सम्पत्ति या राज्य को; परित्यज्य—छोड़कर; देवापिः—देवापि, जो सबसे बड़ा पुत्र था; तु—निस्सन्देह; वनम्—वन में; गतः—चला गया; अभवत्—था; शान्तनुः—शान्तनु; राजा—राजा; प्राक्—पहले; महाभिष—महाभिष; संज्ञितः—

सुप्रसिद्ध; यम् यम्—जिस जिसको; कराभ्याम्—अपने हाथों से; स्पृशति—छूता था; जीर्णम्—यद्यपि अत्यन्त वृद्ध; यौवनम्—युवावस्था को; एति—प्राप्त हुआ; सः—वह।

प्रतीप के तीन पुत्र थे—देवापि, शान्तनु तथा बाह्लीक। देवापि अपने पिता का राज्य त्याग कर जंगल चला गया अतएव शान्तनु राजा हुआ। शान्तनु अपने पूर्वजन्म में महाभिष नाम से विख्यात था। उसमें किसी को भी अपने हाथों के स्पर्श द्वारा बूढ़े से जवान में बदलने की शक्ति थी।

शान्तिमाप्नोति चैवाछयां कर्मणा तेन शान्तनुः ।

समा द्वादश तद्राज्ये न ववर्ष यदा विभुः ॥ १४ ॥

शान्तनुर्ब्राह्मणैरुक्तः परिवेत्तायमग्रभुक् ।

राज्यं देह्यग्रजायाशु पुरराष्ट्रविवृद्धये ॥ १५ ॥

शब्दार्थ

शान्तिम्—इन्द्रियतृप्ति के लिए जवानी; आप्नोति—प्राप्त करता है; च—भी; एव—निस्सन्देह; अछयाम्—मुख्यतः; कर्मणा—अपने हाथ के स्पर्श से; तेन—उसके कारण; शान्तनुः—शान्तनु; समा—वर्षों; द्वादश—बारह; तत्-राज्ये—उसके राज्य में; न—नहीं; ववर्ष—पानी बरसा; यदा—जब; विभुः—वर्षा का स्वामी इन्द्र; शान्तनुः—शान्तनु ने; ब्राह्मणैः—ब्राह्मणों के द्वारा; उक्तः—सलाह दिये जाने पर; परिवेत्ता—शोषक होने के कारण दोषमय; अयम्—यह; अग्र-भुक्—बड़े भाई के होते हुए भी भोग करते हुए; राज्यम्—राज्य; देहि—दे दो; अग्रजाय—अपने बड़े भाई को; आशु—तुरन्त; पुर-राष्ट्र—अपने घर तथा राज्य की; विवृद्धये—उन्नति के लिए।

चूँकि यह राजा अपने हाथ के स्पर्श मात्र से ही सबों की इन्द्रियतृप्ति करके सुखी बनाने में समर्थ था इसीलिए इसका नाम शान्तनु था। एक बार जब राज्य में बारह वर्षों तक वर्षा नहीं हुई तो राजा ने विद्वान ब्राह्मणों से परामर्श किया। उन्होंने कहा, “तुम अपने बड़े भाई की सम्पत्ति भोगने के दोषी हो। तुम अपने राज्य तथा अपने घर की उन्नति के लिए यह राज्य उसे लौटा दो।”

तात्पर्य : अपने बड़े भाई के होते हुए कोई न तो राजा बन सकता है न अग्निहोत्र यज्ञ सम्पन्न कर सकता है अन्यथा वह परिवेत्ता कहलाता है।

एवमुक्तो द्विजैर्ज्यैष्ठं छन्दयामास सोऽब्रवीत् ।

तन्मन्त्रिप्रहितैर्विप्रैर्वेदाद्विभ्रंशितो गिरा ॥ १६ ॥

वेदवादातिवादान्वै तदा देवो ववर्ष ह ।

देवापिर्योगमास्थाय कलापग्राममाश्रितः ॥ १७ ॥

शब्दार्थ

एवम्—इस तरह; उक्तः—सलाह दिये जाने पर; द्विजैः—ब्राह्मणों द्वारा; ज्यैष्ठम्—बड़े भाई देवापि को; छन्दयाम् आस—राज्य ग्रहण करने के लिए प्रार्थना की; सः—उसने; अब्रवीत्—कहा; तत्-मन्त्रि—शान्तनु के मंत्री द्वारा; प्रहितैः—बहकाये जाने पर; विप्रैः—ब्राह्मणों द्वारा; वेदात्—वेदों के नियमों से; विभ्रंशितः—गिरा हुआ; गिरा—ऐसी वाणी से; वेद-वाद-अतिवादान्—वैदिक आदेशों की

निन्दा करने वाले शब्द; वै—निस्सन्देह; तदा—उस समय; देवः—देवता ने; ववर्ष—वर्षा की; ह—भूतकाल में; देवापिः—देवापि ने; योगम् आस्थाय—योगविधि स्वीकार करके; कलाप-ग्रामम्—कलाप नामक गाँव में; आश्रितः—शरण ले ली (और आज भी जीवित है)।

जब ब्राह्मणों ने यह कहा तो महाराज शान्तनु जंगल चला गया और उसने अपने बड़े भाई देवापि से प्रार्थना की कि वह राज्य का भार ग्रहण करे क्योंकि प्रजा का पालन करना राजा का धर्म है। किन्तु इसके पूर्व शान्तनु के मंत्री अश्ववार ने कुछ ब्राह्मणों को फुसलाकर देवापि से वेदों के आदेशों का उल्लंघन करने के लिए प्रेरित किया था जिससे वह शासक पद के अयोग्य हो गया था। ब्राह्मणों ने देवापि को वैदिक सिद्धान्तों के मार्ग से विचलित कर दिया था अतएव जब शान्तनु ने शासक पद ग्रहण करने के लिए कहा तो उसने मना कर दिया। उल्टे, वह वैदिक सिद्धान्तों की निन्दा करने लगा अतएव पतित हो गया। ऐसी परिस्थिति में शान्तनु पुनः राजा बन गया और इन्द्र ने प्रसन्न होकर वर्षा की। बाद में देवापि ने अपने मन तथा इन्द्रियों का दमन करने के लिए योगमार्ग का अनुसरण किया और वह कलापग्राम नामक गाँव में चला गया जहाँ वह अब भी जीवित है।

सोमवंशे कलौ नष्टे कृतादौ स्थापयिष्यति ।

बाह्मीकात्सोमदत्तोऽभूद्भूरिभूरिश्रवास्ततः ॥ १८ ॥

शलश्च शान्तनोरासीद्गङ्गायां भीष्म आत्मवान् ।

सर्वधर्मविदां श्रेष्ठो महाभागवतः कविः ॥ १९ ॥

शब्दार्थ

सोम-वंशे—सोमवंश के; कलौ—कलियुग में; नष्टे—नष्ट होने पर; कृत-आदौ—अगले सत्ययुग के प्रारम्भ में; स्थापयिष्यति—स्थापना करेगा; बाह्मीकात्—बाह्मीक से; सोमदत्तः—सोमदत्त; अभूत्—उत्पन्न हुआ; भूरिः—भूरि; भूरि-श्रवाः—भूरिश्रवा; ततः—तत्पश्चात्; शलः च—शल; शान्तनोः—शान्तनु से; आसीत्—उत्पन्न हुआ; गङ्गायाम्—शान्तनु की पत्नी गंगा के गर्भ से; भीष्मः—भीष्म; आत्मवान्—स्वरूपसिद्ध; सर्व-धर्म-विदाम्—सारे धार्मिक व्यक्तियों का; श्रेष्ठः—श्रेष्ठ; महा-भागवतः—महान् भक्त; कविः—तथा विद्वान्।

इस कलियुग में सोमवंश के समाप्त होने पर और अगले सत्ययुग के प्रारम्भ में देवापि पुनः इस संसार में सोमवंश की स्थापना करेगा। (शान्तनु के भाई) बाह्मीक से सोमदत्त नामक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसके तीन पुत्र हुए—भूरि, भूरिश्रवा तथा शल। शान्तनु की दूसरी पत्नी गंगा के गर्भ से भीष्म उत्पन्न हुआ जो स्वरूपसिद्ध, सभी धार्मिक व्यक्तियों में श्रेष्ठ, महान् भक्त एवं विद्वान् था।

वीरयूथाग्रणीर्येन रामोऽपि युधि तोषितः ।

शान्तनोर्दासकन्यायां जज्ञे चित्राङ्गदः सुतः ॥ २० ॥

शब्दार्थ

वीर-यूथ-अग्रणीः—सारे योद्धाओं में अग्रणी, भीष्मदेव; येन—जिससे; रामः अपि—भगवान् के अवतार परशुराम भी; युधि—युद्ध में; तोषितः—सन्तुष्ट हुआ (भीष्मदेव के हराने पर); शान्तनोः—शान्तनु से; दास-कन्यायाम्—एक शूद्र की कन्या सत्यवती के गर्भ से; जज्ञे—उत्पन्न हुआ; चित्राङ्गदः—चित्राङ्गद; सुतः—पुत्र।

भीष्मदेव सारे योद्धाओं में सर्वश्रेष्ठ था। जब उसने भगवान् परशुराम को युद्ध में हरा दिया तो परशुराम उससे अत्यन्त संतुष्ट हुए। शान्तनु के वीर्य से धीवर की कन्या सत्यवती के गर्भ से चित्राङ्गद ने जन्म लिया।

तात्पर्य : सत्यवती वास्तव में उपरिचर वसु की पुत्री थी जो मत्स्यगर्भा नामक मछुवारिन के गर्भ से उत्पन्न हुई थी। बाद में सत्यवती का पालन एक मछुवारे ने किया था।

परशुराम तथा भीष्मदेव में जो युद्ध हुआ वह काशिराज की तीन कन्याओं—अम्बिका, अम्बालिका और अम्बा को लेकर हुआ क्योंकि भीष्मदेव ने अपने भाई विचित्रवीर्य के लिए इन तीन कन्याओं का अपहरण किया था। अम्बा ने सोचा था कि भीष्मदेव उससे विवाह कर लेगा अतएव वह उस पर अनुरक्त हो गई लेकिन भीष्मदेव ने ब्रह्मचर्य का व्रत ले रखा था अतएव उसने विवाह करने से मना कर दिया। फलतः अम्बा भीष्मपितामह के सैन्य गुरु परशुराम के पास गई जिन्होंने भीष्मदेव से कहा कि वह उसके साथ विवाह कर ले। किन्तु भीष्मदेव ने मना कर दिया अतएव परशुराम ने उससे युद्ध किया ताकि वह विवाह करना स्वीकार कर ले। लेकिन परशुराम हार गये अतः वे भीष्म से प्रसन्न हो गए।

विचित्रवीर्यश्चावरजो नाम्ना चित्राङ्गदो हतः ।

यस्यां पराशरात्साक्षादवतीर्णो हरेः कला ॥ २१ ॥

वेदगुप्तो मुनिः कृष्णो यतोऽहमिदमध्यगाम् ।

हित्वा स्वशिष्यान्पैलादीन्भगवान्बादरायणः ॥ २२ ॥

मह्यं पुत्राय शान्ताय परं गुह्यमिदं जगौ ।

विचित्रवीर्योऽथोवाह काशीराजसुते बलात् ॥ २३ ॥

स्वयंवरादुपानीते अम्बिकाम्बालिके उभे ।

तयोरासक्तहृदयो गृहीतो यक्ष्मणा मृतः ॥ २४ ॥

शब्दार्थ

विचित्रवीर्यः—शान्तनु पुत्र विचित्रवीर्य; च—तथा; अवरजः—छोटा भाई; नाम्ना—नामक; चित्राङ्गदः—चित्राङ्गद नामक गंधर्व द्वारा; हतः—मारा गया; यस्याम्—शान्तनु से विवाह होने के पूर्व सत्यवती के गर्भ में; पराशरात्—पराशर मुनि के वीर्य से; साक्षात्—प्रत्यक्ष; अवतीर्णः—अवतार लेकर; हरेः—भगवान् का; कला—अंश; वेद-गुप्तः—वेदों का रक्षक; मुनिः—मुनि; कृष्णः—कृष्ण द्वैपायन;

यतः—जिससे; अहम्—मैंने (शुकदेव गोस्वामी); इदम्—इस श्रीमद्भागवत को; अध्यगाम्—गहन अध्ययन किया; हित्वा—त्याग कर; स्व-शिष्यान्—अपने शिष्यों को; पैल-आदीन्—पैल इत्यादि को; भगवान्—भगवान् का अवतार; बादरायणः—व्यासदेव ने; मह्यम्—मुझ; पुत्राय—पुत्र को; शान्ताय—इन्द्रियतृप्ति को दमित करने वाले; परम्—परम; गुह्यम्—अत्यन्त गोपनीय; इदम्—इस वैदिक ग्रंथ (श्रीमद्भागवत) को; जगौ—उपदेश दिया; विचित्रवीर्यः—विचित्रवीर्यने; अथ—तत्पश्चात्; उवाह—विवाह ली; काशीराज-सुते—काशीराज की दो कन्याएँ; बलात्—बलपूर्वक; स्वयंवरात्—स्वयंवर स्थल से; उपानीते—लाई जाकर; अम्बिका-अम्बालिके—अम्बिका तथा अम्बालिका; उभे—दोनों; तयोः—उनके प्रति; आसक्त—अनुरक्त; हृदयः—हृदय; गृहीतः—कलुषित; यक्ष्मणा—यक्ष्मा (तपेदिक) से; मृतः—मर गया।

चित्रांगद, जिसका छोटा भाई विचित्रवीर्य था, चित्रांगद नाम के ही गन्धर्व द्वारा मारा गया। सत्यवती ने शान्तनु से विवाह होने के पूर्व वेदों के ज्ञाता व्यासदेव को जन्म दिया था। ये कृष्ण द्वैपायन कहलाये और पराशर मुनि के वीर्य से उत्पन्न हुए थे। व्यासदेवसे मैं (शुकदेव गोस्वामी) उत्पन्न हुआ और मैंने उनसे इस महान् ग्रंथ श्रीमद्भागवत का अध्ययन किया। भगवान् के अवतार वेदव्यास ने पैल इत्यादि अपने शिष्यों को छोड़कर मुझे श्रीमद्भागवत पढ़ाया क्योंकि मैं सभी भौतिक कामनाओं से मुक्त था। जब काशीराज की दो कन्याओं, अम्बिका और अम्बालिका का बलपूर्वक अपहरण हो गया तो विचित्रवीर्य ने उनसे विवाह कर लिया, किन्तु इन दोनों पत्नियों से अत्यधिक आसक्त रहने के कारण उसे तपेदिक हो गया जिससे वह मर गया।

क्षेत्रेऽप्रजस्य वै भ्रातुर्मात्रोक्तो बादरायणः ।

धृतराष्ट्रं च पाण्डुं च विदुरं चाप्यजीजनत् ॥ २५ ॥

शब्दार्थ

क्षेत्रे—पत्नियों तथा दासियों में; अप्रजस्य—निःसन्तान विचित्रवीर्य की; वै—निस्सन्देह; भ्रातुः—भाई की; मात्रा उक्तः—माता के आदेश से; बादरायणः—वेदव्यास ने; धृतराष्ट्रम्—धृतराष्ट्र को; च—तथा; पाण्डुम्—पाण्डु को; च—भी; विदुरम्—विदुर को; च—भी; अपि—निस्सन्देह; अजीजनत्—उत्पन्न किया।

बादरायण, श्री व्यासदेव, ने अपनी माता सत्यवती के आदेशानुसार तीन पुत्र उत्पन्न किये—दो पुत्र अपने भाई विचित्रवीर्य की पत्नियों अम्बिका तथा अम्बालिका के गर्भ से और तीसरा विचित्रवीर्य की दासी से। तीनों पुत्रों के नाम थे धृतराष्ट्र, पाण्डु तथा विदुर।

तात्पर्य : विचित्रवीर्य की मृत्यु तपेदिक से हो गई और उसकी पत्नियों—अम्बिका तथा अम्बालिका से कोई सन्तान न थी। अतः विचित्रवीर्य की मृत्यु के बाद उसकी माता सत्यवती ने, जो कि व्यासदेव की भी माता थीं, व्यासदेव से कहा कि वह विचित्रवीर्य की पत्नियों से सन्तान उत्पन्न करे। उन दिनों पति का भाई (देवर) अपनी भाभी से सन्तान उत्पन्न कर सकता था। यह देवरेण सुतोत्पत्ति कहलाती थी। यदि किसी

कारणवश पति सन्तान उत्पन्न करने में अक्षम होता था तो उसका भाई अपनी भाभी से सन्तान उत्पन्न कर सकता था। कलियुग में यह देवरेण सुतोत्पत्ति तथा अश्वमेध और गोमेध यज्ञ वर्जित हैं।

अश्वमेधं गवालम्भं संन्यासं पलपैतृकम्।

देवरेण सुतोत्पत्तिं कलौ पञ्च विवर्जयेत् ॥

“इस कलियुग में पाँच कार्य करने की मनाही है—अश्वमेध यज्ञ, गोमेध यज्ञ, संन्यास आश्रम ग्रहण करना, पूर्वजों को मांस की भेंट तथा देवर द्वारा भाभी से सन्तानोत्पत्ति।” (ब्रह्मवैवर्त पुराण)।

गान्धार्या धृतराष्ट्रस्य जज्ञे पुत्रशतं नृप ।

तत्र दुर्योधनो ज्येष्ठो दुःशला चापि कन्यका ॥ २६ ॥

शब्दार्थ

गान्धार्याम्—गान्धारी के गर्भ में; धृतराष्ट्रस्य—धृतराष्ट्र का; जज्ञे—उत्पन्न हुए; पुत्र-शतम्—एक सौ पुत्र; नृप—हे राजा परीक्षित;
तत्र—उन पुत्रों में; दुर्योधनः—दुर्योधन नामक पुत्र; ज्येष्ठः—सबसे बड़ा; दुःशला—दुःशला; च अपि—भी; कन्यका—एक पुत्री।

हे राजा, धृतराष्ट्र की पत्नी गान्धारी ने एक सौ पुत्र तथा एक कन्या को जन्म दिया। सबसे बड़ा पुत्र दुर्योधन था और कन्या का नाम दुःशला था।

शापान्मैथुनरुद्धस्य पाण्डोः कुन्त्यां महारथाः ।

जाता धर्मानिलेन्द्रेभ्यो युधिष्ठिरमुखास्त्रयः ॥ २७ ॥

नकुलः सहदेवश्च मादूर्यां नासत्यदस्त्रयोः ।

द्रौपद्यां पञ्च पञ्चभ्यः पुत्रास्ते पितरोऽभवन् ॥ २८ ॥

शब्दार्थ

शापात्—शाप से; मैथुन-रुद्धस्य—विषयी जीवन रोक देने से; पाण्डोः—पाण्डु का; कुन्त्याम्—कुन्ती के गर्भ में; महा-रथाः—बड़े-बड़े वीर; जाताः—उत्पन्न हुए; धर्म—महाराज धर्म या धर्मराज; अनिल—वायुदेव; इन्द्रेभ्यः—तथा वर्षा के देवता इन्द्र के द्वारा; युधिष्ठिर—युधिष्ठिर; मुखाः—इत्यादि; त्रयः—तीन पुत्र (युधिष्ठिर, भीम तथा अर्जुन); नकुलः—नकुल; सहदेवः—सहदेव; च—भी; मादूर्याम्—माद्री के गर्भ से; नासत्य-दस्त्रयोः—नासत्य और दस्त्र अश्विनीकुमारों द्वारा; द्रौपद्याम्—द्रौपदी के गर्भ से; पञ्च—पाँच; पञ्चभ्यः—पाँचों भाइयों युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव द्वारा; पुत्राः—पुत्र; ते—वे; पितरः—चाचा; अभवन्—बने।

एक मुनि के द्वारा शापित होने से पाण्डु का विषयी जीवन अवरुद्ध हो गया अतएव उसकी पत्नी कुन्ती के गर्भ से तीन पुत्र युधिष्ठिर, भीम तथा अर्जुन उत्पन्न हुए जो क्रमशः धर्मराज, वायुदेव तथा इन्द्रदेव के पुत्र थे। पाण्डु की दूसरी पत्नी माद्री ने नकुल तथा सहदेव को जन्म दिया जो दोनों अश्विनीकुमारों द्वारा उत्पन्न थे। युधिष्ठिर इत्यादि पाँचों भाइयों ने द्रौपदी के गर्भ से पाँच पुत्र उत्पन्न किये। ये पाँचों पुत्र तुम्हारे चाचा थे।

युधिष्ठिरात्प्रतिविन्ध्यः श्रुतसेनो वृकोदरात् ।
अर्जुनाच्छ्रुतकीर्तिस्तु शतानीकस्तु नाकुलिः ॥ २९ ॥

शब्दार्थ

युधिष्ठिरात्—महाराज युधिष्ठिर से; प्रतिविन्ध्यः—प्रतिविन्ध्य; श्रुतसेनः—श्रुतसेन; वृकोदरात्—भीम से; अर्जुनात्—अर्जुन से;
श्रुतकीर्तिः—श्रुतकीर्ति; तु—निस्सन्देह; शतानीकः—शतानीक; तु—निस्सन्देह; नाकुलिः—नाकुल के।

युधिष्ठिर से प्रतिविन्ध्य, भीम से श्रुतसेन, अर्जुन से श्रुतकीर्ति तथा नाकुल से शतानीक नामक पुत्र हुए।

सहदेवसुतो राजञ्छ्रुतकर्मा तथापरे ।
युधिष्ठिरात्तु पौरव्यां देवकोऽथ घटोत्कचः ॥ ३० ॥
भीमसेनाद्धिडिम्बायां काल्यां सर्वगतस्ततः ।
सहदेवात्सुहोत्रं तु विजयासूत पार्वती ॥ ३१ ॥

शब्दार्थ

सहदेव-सुतः—सहदेव का पुत्र; राजन्—हे राजा; श्रुतकर्मा—श्रुतकर्मा; तथा—और; अपरे—अन्य; युधिष्ठिरात्—युधिष्ठिर से; तु—निस्सन्देह; पौरव्याम्—पौरवी के गर्भ से; देवकः—देवक; अथ—तथा; घटोत्कचः—घटोत्कच; भीमसेनात्—भीमसेन से;
हिडिम्बायाम्—हिडिम्बा के गर्भ से; काल्याम्—काली के गर्भ से; सर्वगतः—सर्वगत; ततः—तत्पश्चात्; सहदेवात्—सहदेव से;
सुहोत्रम्—सुहोत्र; तु—निस्सन्देह; विजया—विजया ने; असूत—जन्म दिया; पार्वती—हिमालय राज की पुत्री।

हे राजा, सहदेव का पुत्र श्रुतकर्मा था। यही नहीं, युधिष्ठिर तथा उनके भाइयों की अन्य पत्नियों से और भी पुत्र उत्पन्न हुए। युधिष्ठिर ने पौरवी के गर्भ से देवक को और भीमसेन ने अपनी पत्नी हिडिम्बा के गर्भ से घटोत्कच तथा अपनी अन्य पत्नी काली के गर्भ से सर्वगत नामक पुत्रों को जन्म दिया। इसी प्रकार सहदेव को उसकी पत्नी विजया से सुहोत्र नाम का पुत्र प्राप्त हुआ। विजया पर्वतों के राजा की पुत्री थी।

करेणुमत्यां नकुलो नरमित्रं तथार्जुनः ।
इरावन्तमुलुप्यां वै सुतायां बभ्रुवाहनम् ।
मणिपुरपतेः सोऽपि तत्पुत्रः पुत्रिकासुतः ॥ ३२ ॥

शब्दार्थ

करेणुमत्याम्—करेणुमती नामक पत्नी से; नकुलः—नकुल ने; नरमित्रम्—नरमित्र को; तथा—भी; अर्जुनः—अर्जुन ने; इरावन्तम्—इरावान को; उलुप्याम्—नागकन्या उलुपी के गर्भ से; वै—निस्सन्देह; सुतायाम्—पुत्री से; बभ्रुवाहनम्—बभ्रुवाहन; मणिपुर-पतेः—मणिपुर के राजा की; सः—वह; अपि—यद्यपि; तत्-पुत्रः—अर्जुन का पुत्र; पुत्रिका-सुतः—अपने नाना का पुत्र।

नकुल की पत्नी करेणुमती से नरमित्र नामक पुत्र हुआ। इसी प्रकार अर्जुन को नागकन्या उलुपी

नामक अपनी पत्नी से इरावान नामक पुत्र तथा मणिपुर की राजकुमारी के गर्भ से बभ्रुवाहन नामक पुत्र की प्राप्ति हुई। बभ्रुवाहन मणिपुर के राजा का दत्तक पुत्र बन गया।

तात्पर्य : यह समझ लेना चाहिए कि पार्वती मणिपुर नामक अत्यन्त प्राचीन पहाड़ी देश के राजा की कन्या थी। अतएव पाँच हजार वर्ष पूर्व जब पाण्डव शासन कर रहे थे तो मणिपुर का अस्तित्व था और इसका राजा भी होता था। अतएव मणिपुर राज्य अत्यन्त प्राचीन राजतंत्र वैष्णव राज्य था। यदि इसे वैष्णव राज्य के रूप में फिर से संगठित किया जाय तो महान् सफलता प्राप्त हो सकती है क्योंकि यह राज्य पाँच हजार वर्षों से अपनी पहचान बनाये हुए है। यदि यहाँ वैष्णव वृत्ति का पुनर्जागरण हो तो यह सारे विश्व में अद्भुत स्थान सिद्ध हो सकता है। वैष्णव समाज में मणिपुरी वैष्णव अत्यन्त विख्यात हैं। वृन्दावन एवं नवद्वीप में मणिपुर के राजा के बनवाये अनेक मन्दिर हैं। हमारे कुछ भक्त मणिपुर के हैं। अतएव कृष्णभक्तों के सहयोग से मणिपुर राज्य में कृष्णभावनामृत आन्दोलन का भलीभाँति प्रसार हो सकता है।

तव तातः सुभद्रायामभिमन्युरजायत ।
सर्वातिरथजिद्वीर उत्तरायां ततो भवान् ॥ ३३ ॥

शब्दार्थ

तव—तुम्हारा; तातः—पिता; सुभद्रायाम्—सुभद्रा के गर्भ से; अभिमन्युः—अभिमन्यु; अजायत—उत्पन्न हुआ था; सर्व—अतिरथ-जित्—अतिरथों को पराजित करने वाला महान् योद्धा; वीरः—वीर; उत्तरायाम्—उत्तरा के गर्भ में; ततः—अभिमन्यु से; भवान्—आप।

हे राजा परीक्षित, तुम्हारे पिता अभिमन्यु अर्जुन के पुत्र रूप में सुभद्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए। वे सभी अतिरथों (जो एक हजार रथवानों से युद्ध कर सके) के विजेता थे। उनके द्वारा विराट्राज की पुत्री उत्तरा के गर्भ से तुम उत्पन्न हुए।

परिक्षीणेषु कुरुषु द्रौणेर्ब्रह्मास्त्रतेजसा ।
त्वं च कृष्णानुभावेन सजीवो मोचितोऽन्तकात् ॥ ३४ ॥

शब्दार्थ

परिक्षीणेषु—कुरुक्षेत्र युद्ध में विनष्ट हो जाने पर; कुरुषु—कुरुवंशियों, यथा दुर्योधन के; द्रौणेः—द्रोणाचार्य का पुत्र अश्वत्थामा द्वारा; ब्रह्मास्त्र-तेजसा—ब्रह्मास्त्र की गर्मी से; त्वम् च—तुम भी; कृष्ण-अनुभावेन—कृष्ण के अनुग्रह से; सजीवः—जीवित; मोचितः—छुड़ा लिये गये; अन्तकात्—मृत्यु से।

जब कुरुक्षेत्र के युद्ध में कुरुवंश का विनाश हो गया तो तुम भी द्रोणाचार्य के पुत्र द्वारा छोड़े

गये ब्रह्मास्त्र के द्वारा विनष्ट होने वाले थे, किन्तु भगवान् कृष्ण की कृपा से तुम्हें मृत्यु से बचा लिया गया।

तवेमे तनयास्तात जनमेजयपूर्वकाः ।
श्रुतसेनो भीमसेन उग्रसेनश्च वीर्यवान् ॥ ३५ ॥

शब्दार्थ

तव—तुम्हारे; इमे—ये सभी; तनयाः—पुत्र; तात—हे राजा परीक्षित; जनमेजय—जनमेजय; पूर्वकाः—प्रमुख, इत्यादि; श्रुतसेनः—श्रुतसेन; भीमसेनः—भीमसेन; उग्रसेनः—उग्रसेन; च—भी; वीर्यवान्—शक्तिमान्।

हे राजा, तुम्हारे चारों पुत्र—जनमेजय, श्रुतसेन, भीमसेन तथा उग्रसेन अत्यन्त शक्तिशाली हैं।
जनमेजय उनमें सबसे बड़ा है।

जनमेजयस्त्वां विदित्वा तक्षकान्निधनं गतम् ।
सर्पान्वै सर्पयागाग्नौ स होष्यति रुषान्वितः ॥ ३६ ॥

शब्दार्थ

जनमेजयः—जनमेजय; त्वाम्—तुमको; विदित्वा—जानकर; तक्षकात्—तक्षक नाग द्वारा; निधनम्—मृत्यु को; गतम्—प्राप्त हुआ; सर्पान्—साँपों को; वै—निस्सन्देह; सर्प-याग-अग्नौ—सर्पों को मारने के लिए यज्ञ अग्नि में; सः—वह (जनमेजय); होष्यति—आहुति डालेगा; रुषा-अन्वितः—अत्यन्त क्रोधित होने के कारण।

तक्षक सर्प द्वारा तुम्हारी मृत्यु हो जाने के कारण तुम्हारा पुत्र जनमेजय अत्यन्त क्रुद्ध होगा और संसार के सारे सर्पों को मारने के लिए यज्ञ करेगा।

कालषेयं पुरोधाय तुरं तुरगमेधषाट् ।
समन्तात्पृथिवीं सर्वां जित्वा यक्ष्यति चाध्वरैः ॥ ३७ ॥

शब्दार्थ

कालषेयम्—कलष के पुत्र को; पुरोधाय—पुरोहित के रूप में मानकर; तुरम्—तुर को; तुरग-मेधषाट्—तुरग-मेधषाट् के नाम से (अनेक तुरग यज्ञ करने वाला) जाना जायेगा; समन्तात्—सारे भागों सहित; पृथिवीम्—संसार को; सर्वां—सर्वत्र; जित्वा—जीतकर; यक्ष्यति—यज्ञ करेगा; च—तथा; अध्वरैः—अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न करके।

सारे संसार को जीतने के बाद और कलष के पुत्र तुर को अपना पुरोहित बनाकर, जनमेजय अश्वमेध यज्ञ करेगा जिसके कारण वह तुरग-मेधषाट् कहलायेगा।

तस्य पुत्रः शतानीको याज्ञवल्क्यात्रयीं पठन् ।
अस्त्रज्ञानं क्रियाज्ञानं शौनकात्परमेष्ठ्यति ॥ ३८ ॥

शब्दार्थ

तस्य—उसका; पुत्रः—पुत्र; शतानीकः—शतानीक; याज्ञवल्क्यात्—ऋषि याज्ञवल्क्य से; त्रयीम्—तीनों वेद (साम, यजुर तथा ऋग्); पठन्—भलीभाँति अध्ययन करते हुए; अस्त्र-ज्ञानम्—सैनिक शासन कला; क्रिया-ज्ञानम्—कर्मकाण्ड सम्पन्न करने की कला; शौनकात्—शौनक ऋषि से; परम्—दिव्य ज्ञान; एष्यति—प्राप्त करेगा।

जनमेजय का पुत्र शतानीक ऋषि याज्ञवल्क्य से तीनों वेद और कर्मकाण्ड सम्पन्न करने की कला को सीखेगा। वह कृपाचार्य से सैन्य कला भी सीखेगा तथा शौनक मुनि से दिव्य ज्ञान प्राप्त करेगा।

सहस्रानीकस्तत्पुत्रस्ततश्चैवाश्वमेधजः ।

असीमकृष्णस्तस्यापि नेमिचक्रस्तु तत्सुतः ॥ ३९ ॥

शब्दार्थ

सहस्रानीकः—सहस्रानीक; तत्-पुत्रः—शतानीक का पुत्र; ततः—सहस्रानीक से; च—भी; एव—निस्सन्देह; अश्वमेधजः—अश्वमेधज; असीमकृष्णः—असीमकृष्ण; तस्य—उसका (अश्वमेधज); अपि—भी; नेमिचक्रः—नेमिचक्र; तु—निस्सन्देह; तत्-सुतः—उसका पुत्र।

शतानीक का पुत्र सहस्रानीक होगा और उसके पुत्र का नाम अश्वमेधज होगा। अश्वमेधज से असीमकृष्ण उत्पन्न होगा और उसका पुत्र नेमिचक्र होगा।

गजाह्वये हते नद्या कौशाम्ब्यां साधु वत्स्यति ।

उक्तस्ततश्चित्ररथस्तस्माच्छुचिरथः सुतः ॥ ४० ॥

शब्दार्थ

गजाह्वये—हस्तिनापुर नगरी (नई दिल्ली) में; हते—जलमग्न होने पर; नद्या—नदी के द्वारा; कौशाम्ब्याम्—कौशाम्बी नामक स्थान में; साधु—भलीभाँति; वत्स्यति—वहाँ निवास करेगा; उक्तः—विख्यात; ततः—तत्पश्चात्; चित्ररथः—चित्ररथ; तस्मात्—उससे; शुचिरथः—शुचिरथ; सुतः—पुत्र।

जब हस्तिनापुर नगरी (नई दिल्ली) नदी की बाढ़ से जलमग्न हो जायेगी तो नेमिचक्र कौशाम्बी नामक स्थान में निवास करेगा। उसका पुत्र चित्ररथ नाम से विख्यात होगा और चित्ररथ का पुत्र शुचिरथ होगा।

तस्माच्च वृष्टिमांस्तस्य सुषेणोऽथ महीपतिः ।

सुनीथस्तस्य भविता नृचक्षुर्यत्सुखीनलः ॥ ४१ ॥

शब्दार्थ

तस्मात्—उससे (शुचिरथ); च—भी; वृष्टिमान्—वृष्टिमान; तस्य—उसका पुत्र; सुषेणः—सुषेण; अथ—तत्पश्चात्; मही-पतिः—सारे संसार का सम्राट; सुनीथः—सुनीथ; तस्य—उसका; भविता—होगा; नृचक्षुः—पुत्र नृचक्षु; यत्—उससे; सुखीनलः—सुखीनल।

शुचिरथ का पुत्र वृष्टिमान होगा और उसका पुत्र सुषेण नाम का चक्रवर्ती राजा होगा। सुषेण का पुत्र सुनीथ होगा, उसका पुत्र नृचक्षु होगा और नृचक्षु का पुत्र सुखीनल होगा।

परिप्लवः सुतस्तस्मान्मेधावी सुनयात्मजः ।
नृपञ्जयस्ततो दूर्वस्तिमिस्तस्माज्जनिष्यति ॥ ४२ ॥

शब्दार्थ

परिप्लवः—परिप्लव; सुतः—पुत्र; तस्मात्—उससे (परिप्लव); मेधावी—मेधावी; सुनय-आत्मजः—सुनय का पुत्र; नृपञ्जयः—नृपञ्जय; ततः—उससे; दूर्वः—दूर्व; तिमिः—तिमि; तस्मात्—उससे; जनिष्यति—जन्म लेगा।

सुखीनल का पुत्र परिप्लव, परिप्लव का सुनय और सुनय का पुत्र मेधावी होगा। मेधावी से नृपञ्जय, नृपञ्जय से दूर्व तथा दूर्व से तिमि का जन्म होगा।

तिमेर्बृहद्रथस्तस्माच्छतानीकः सुदासजः ।
शतानीकादुर्दमनस्तस्यापत्यं महीनरः ॥ ४३ ॥

शब्दार्थ

तिमेः—तिमि का; बृहद्रथः—बृहद्रथ; तस्मात्—उससे; शतानीकः—शतानीक; सुदास-जः—सुदास का पुत्र; शतानीकात्—शतानीक से; दुर्दमनः—दुर्दमन; तस्य अपत्यम्—उसका पुत्र; महीनरः—महीनर।

तिमि का पुत्र बृहद्रथ, बृहद्रथ का सुदास, सुदास का शतानीक, शतानीक का दुर्दमन और दुर्दमन का पुत्र महीनर होगा।

दण्डपाणिर्निमिस्तस्य क्षेमको भविता यतः ।
ब्रह्मक्षत्रस्य वै योनिर्वंशो देवर्षिसत्कृतः ॥ ४४ ॥
क्षेमकं प्राप्य राजानं संस्थां प्राप्स्यति वै कलौ ।
अथ मागधराजानो भाविनो ये वदामि ते ॥ ४५ ॥

शब्दार्थ

दण्डपाणिः—दण्डपाणि; निमिः—निमि; तस्य—उसका (महीनर के); क्षेमकः—क्षेमक; भविता—जन्म लेगा; यतः—जिससे; ब्रह्म-क्षत्रस्य—ब्राह्मणों तथा क्षत्रियों का; वै—निस्सन्देह; योनिः—स्रोत; वंशः—वंश; देव-ऋषि-सत्कृतः—ऋषियों तथा देवताओं द्वारा सम्मानित; क्षेमकम्—राजा क्षेमक को; प्राप्य—यहाँ तक; राजानम्—राजा को; संस्थाम्—उन तक; प्राप्स्यति—हो जायेगा; वै—निस्सन्देह; कलौ—इस कलियुग में; अथ—तत्पश्चात्; मागध-राजानः—मागध वंशी राजा; भाविनः—भावी; ये—जो; वदामि—कहूँगा; ते—तुमसे।

महीनर का पुत्र दण्डपाणि होगा और उसका पुत्र निमि होगा जिससे राजा क्षेमक की उत्पत्ति होगी। मैंने अभी तुमसे सोमवंश का वर्णन किया है जो ब्राह्मणों तथा क्षत्रियों का उद्गम है और देवताओं तथा ऋषियों-मुनियों द्वारा पूजित है। इस कलियुग में क्षेमक अन्तिम राजा होगा। अब मैं

तुमसे मागध वंश का भविष्य बतलाऊंगा। उसे सुनो।

भविता सहदेवस्य मार्जारिर्यच्छ्रुतश्रवाः ।

ततो युतायुस्तस्यापि निरमित्रोऽथ तत्सुतः ॥ ४६ ॥

सुनक्षत्रः सुनक्षत्राद्बृहत्सेनोऽथ कर्मजित् ।

ततः सुतञ्जयाद्विप्रः शुचिस्तस्य भविष्यति ॥ ४७ ॥

क्षेमोऽथ सुव्रतस्तस्माद्धर्मसूत्रः समस्ततः ।

द्युमत्सेनोऽथ सुमतिः सुबलो जनिता ततः ॥ ४८ ॥

शब्दार्थ

भविता—जन्म लेगा; सहदेवस्य—सहदेव का पुत्र; मार्जारिः—मार्जारि; यत्—उसका पुत्र; श्रुतश्रवाः—श्रुतश्रवा; ततः—उससे; युतायुः—युतायु; तस्य—उसका पुत्र; अपि—भी; निरमित्रः—निरमित्र; अथ—तत्पश्चात्; तत्—सुतः—उसका पुत्र; सुनक्षत्रः—सुनक्षत्र; सुनक्षत्रात्—सुनक्षत्र से; बृहत्सेनः—बृहत्सेन; अथ—उससे; कर्मजित्—कर्मजित; ततः—उससे; सुतञ्जयात्—सुतञ्जय से; विप्रः—विप्र; शुचिः—शुचि; तस्य—उसका; भविष्यति—होगा; क्षेमः—क्षेम; अथ—तत्पश्चात्; सुव्रतः—सुव्रत; तस्मात्—उससे; धर्मसूत्रः—धर्मसूत्र; समः—सम; ततः—उससे; द्युमत्सेनः—द्युमत्सेन; अथ—तत्पश्चात्; सुमतिः—सुमति; सुबलः—सुबल; जनिता—जन्म लेगा; ततः—तत्पश्चात्।

जरासन्धपुत्र सहदेव के पुत्र का नाम मार्जारि होगा। मार्जारि से श्रुतश्रवा, श्रुतश्रवा से युतायु, युतायु से निरमित्र, निरमित्र से सुनक्षत्र, सुनक्षत्र से बृहत्सेन, बृहत्सेन से कर्मजित, कर्मजित से सुतञ्जय, सुतञ्जय से विप्र, विप्र से शुचि, शुचि से क्षेम, क्षेम से सुव्रत, सुव्रत से धर्मसूत्र, धर्मसूत्र से सम, सम से द्युमत्सेन, द्युमत्सेन से सुमति और सुमति से सुबल नाम का पुत्र उत्पन्न होगा।

सुनीथः सत्यजिदथ विश्वजिद्यद्रिपुञ्जयः ।

बार्हद्रथाश्च भूपाला भाव्याः साहस्रवत्सरम् ॥ ४९ ॥

शब्दार्थ

सुनीथः—सुबल से सुनीथ उत्पन्न होगा; सत्यजित्—सत्यजित; अथ—उससे; विश्वजित्—विश्वजित; यत्—उससे; रिपुञ्जयः—रिपुञ्जय; बार्हद्रथाः—बृहद्रथ की वंशावली में; च—भी; भूपालाः—सारे राजा; भाव्याः—होंगे; साहस्र-वत्सरम्—एक हजार वर्षों तक लगातार।

सुबल से सुनीथ, सुनीथ से सत्यजित, सत्यजित से विश्वजित एवं विश्वजित से रिपुञ्जय उत्पन्न होगा। ये सभी पुरुष बृहद्रथवंशी होंगे और ये संसार पर एक हजार वर्षों तक राज्य करेंगे।

तात्पर्य : यह जरासन्ध से प्रारम्भ होकर एक हजार वर्षों तक पृथ्वी पर राज्य करने वाले उपर्युक्त राजाओं का इतिहास है।

इस प्रकार श्रीमद्भागवत के नवम स्कन्ध के अन्तर्गत “अजमीढ के वंशज” नामक बाईसवें अध्याय के

भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुए।